P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन का उनके लिंग, क्षेत्र एवं विषय वर्ग के सन्दर्भ में अध्ययन

सारांश

विद्यार्थी देश का भविष्य हैं। जब तक विद्याथी समायोजित नहीं हैं तब तक वे न तो अपना और न ही देश का विकास कर सकते है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए शोधार्थी ने माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन का उनके लिंग, क्षेत्र एवं विषय वर्ग के सन्दर्भ में अध्ययन किया है। वर्तमान शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों–बालिकाओं, ग्रामीण–शहरी विद्यार्थियों एवं कला वर्ग व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना है। शोध की प्रकृति के अनुसार शोध में वर्णनात्मक शोधविधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध में यादृच्छिक न्यादर्श प्रविधि का प्रयोग किया गया तथा जनपद देहरादून के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया। न्यादर्श में ग्रामीण तथा शहरी बालकों–बालिकाओं को सम्मिलित किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी' अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया। शोध के परिणामों में बालकों तथा बालिकाओं के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया है परन्तु इनके सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के संवेगात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया है। परन्तु माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के संवेगात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

मुख्य शब्द : संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन, शैक्षिक समायोजन तथा माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थी।

पुष्पेन्द्र सिंह
शोधकर्ता
शिक्षाशास्त्र विभाग
हे0न0ब0 केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल, भारत

ए0के0 नौटियाल
एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षाशास्त्र विभाग
हे0न0ब0 केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल, भारत

प्रस्तावना

समायोजन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जो व्यक्ति को अपने वातावरण से संघर्ष करके उसके अनुरूप बनाती है। सामान्यतः किसी व्यक्ति का अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए परिस्थितियों के अनुकूल बन जाना अथवा परिस्थितियों को स्वयं के अनुकूल बना लेना ही समायोजन कहलाता है। *बोरिंग, लैंगफेल्ड तथा वेल्ड* के अनुसार, *''समायोजन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन रखता है।''* *गेट्स* के अनुसार, *''समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलित सम्बन्ध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।''*

जीवन में प्रत्येक व्यक्ति की कुछ न कुछ समस्यायें होती है। उसे जीवन की समस्याओं और चुनौतियों का अपनी योग्यताओं और वातावरण के संदर्भ में सामना करना होता है, कभी समझौता करना होता है तो सभी उनके साथ समन्वय करना होता है, इस सम्पूर्ण प्रक्रिया और उपलब्धि को ही समायोजन कहा जाता है। समायोजन आवश्यक्ताओं या इच्छाओं की पूर्ति के लिए परिस्थितियों तथा व्यवहार के मध्य संतुलन है। प्रत्येक व्यक्ति के सम्मुख समायोजन की समस्या होती है। इसका समाधान वह अपनी क्षमता के अनुरूप करता है तथा जब वह समायोजन करने में असफल रहता है तब कुंठा का शिकार हो जाता है।

विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए समायोजन बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि समायोजन के अभाव में तनाव, चिन्ता, संवेगात्मक असन्तुलन तथा मानसिक द्वन्द्वों का शिकार हो जाते हैं। अतः अत्यन्त आवश्यक है कि विद्यार्थियों के समायोजन का निरन्तर रूप से निरीक्षण तथा अध्ययन किया जाना चाहिए। अनेक विद्वानों द्वारा विद्याथियों के समायोजन का अध्ययन किया गया है। *मुछाल, महेश कुमार तथा कुमार, सुभाष (2008)* द्वारा

किये गये शोध में शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा समायोजन के मध्य उच्च ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। *यादव, कमलेश तथा नायक, गोपाल प्रसाद (2009)* द्वारा किये गये शोध में दृष्टिबाधित, मूक बधिर एवं सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन प्रारूप में सार्थक अन्तर पाया गया। मूक बधिर विद्यार्थी, दृष्टिबाधित तथा सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में सबसे कम समायोजित पाये गये।

दुबे, भावेश चन्द्र (2011) द्वारा किये गये शोध में निम्न तथा उच्च अभिप्रेरित समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा समायोजन के मध्य सार्थक ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। *देवी, निर्मला (2011)* द्वारा किये गये शोध में उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं बहिर्मुखता का संवेगात्मक समायोजन पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया परन्तु संवेगात्मक समायोजन एवं न्यूरोटिसिज्म में सार्थक ऋणात्मक सम्बन्ध पाया गया। *देवगन, प्रवीन तथा बघेल, अंजू (2012)* के शोध में मुस्लिम समूह की छात्राऐं सबसे कम समायोजित पायी गयी। *मित्तल, अर्चना (2012)* द्वारा किये गये शोध में बालकों तथा बालिकाओं के समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया तथा बालिकाओं की तुलना में बालक अधिक समायोजित पाये गये। *येल्लाह (2012)* द्वारा किये गये शोध में शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के संवेगात्मक, सामाजिक, शैक्षिक तथा कुल समायोजन में अन्तर नहीं पाया गया परन्तु विद्यार्थियों के समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

राम, सन्त तथा पचौरी, सुरेश चन्द्र (2013) द्वारा किये गये शोध में छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि तथा सामाजिक समायोजन में सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। *शेखर, चन्द्र तथा अन्य (2014)* द्वारा किये गये शोध में कक्षा 9 तथा कक्षा 11 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के संवेगात्मक, सामाजिक, शैक्षिक तथा कुल समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। *निधि तथा करमाने, मुन्तिजर मकबूल (2015)* द्वारा किये गये शोध में छात्रों में संवेगात्मक समायोजन की समस्याओं का स्तर उच्च पाया गया जबकि घरेलू समायोजन की समस्याओं का स्तर निम्न पाया गया। *कौर, जसबीर तथा कौर, मनदीप (2016)* द्वारा किये गये शोध में सह–शिक्षा तथा गैर सह–शिक्षा वाले विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर छात्राओं के समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया, *शीतल (2016)* द्वारा किये गये शोध में अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी किशोर विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

उपर्युक्त शोध अध्ययनों के संक्षिप्त विवरण से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के समायोजन पर अनेक सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक चरों का प्रभाव देखा गया है। परन्तु कोई भी अध्ययन देहरादून जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर नहीं किया गया है। अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा जनपद देहरादून के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन पर उनके लिंग, क्षेत्र तथा विषय वर्ग के प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों को निर्धारित किया गया है :–

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों एवं बालिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों तथा शहरी विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं

प्रस्तुत शोध में निम्न परिकल्पनाओं का प्रतिपादन किया गया है :–

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों एवं बालिकाओं के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों तथा शहरी विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन का उनके लिंग, क्षेत्र तथा विषय वर्ग के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है। शोध के उद्देश्य तथा प्रकृति को ध्यान में रखते हुए इस शोध में वर्णनात्मक शोधविधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श एवं न्यादर्श प्रविधि

प्रस्तुत शोध में यादृच्छिक न्यादर्श प्रविधि का प्रयोग किया गया। शोध के लिए जनपद देहरादून के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया। न्यादर्श में बालक–बालिकाओं, ग्रामीण–शहरी तथा कला–विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। न्यादर्श प्रारूप को निम्न सारणी में प्रस्तुत किया गया है–

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

न्यादर्श प्रारूप

जनपद	क्षेत्र	लिंग	विषय वर्ग	चयनित न्यादर्श	कुल न्यादर्श
देहरादून	ग्रामीण	बालक	कला	25	100
			विज्ञान	25	
		बालिका	कला	25	
			विज्ञान	25	
	शहरी	बालक	कला	25	100
			विज्ञान	25	
		बालिका	कला	25	
			विज्ञान	25	
कुल				200	200

शोध उपकरण

वर्तमान शोध में प्रदत्तों का संकलन करने हेतु ए0के0पी0 सिन्हा तथा आर0पी0 सिंह द्वारा निर्मित ''एडजेस्टमेन्ट इन्वेनट्री फॉर स्कूल स्टूडेन्टस'' का प्रयोग किया गया है। इस इन्वेनट्री में कुल 60 कथन हैं जो विद्यार्थियों के समायोजन का मापन करते हैं। यह इन्वेनट्री विद्यार्थियों के समायोजन के तीन पक्षों का मापन करती है – संवेगात्मक, सामाजिक तथा शैक्षिक। इन्वेनट्री का न्यूनतम प्राप्तांक '0' एव अधिकतम प्राप्तांक '60' है। अधिक प्राप्तांक निम्न समायोजन को तथा कम प्राप्तांक उच्च समायोजन को प्रदर्शित करता है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी' अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

व्याख्या एवं विश्लेषण

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या निम्न प्रकार हैः

सारणी – 1

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन का मध्यमान तथा मानक विचलन

	समायोजन	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन	संवेगात्मक	200	12.87	2.88
	सामाजिक	200	10.29	3.44
	शैक्षिक	200	11.89	3.62

सारणी–1 में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के संवेगात्मक, सामाजिक तथा शैक्षिक समायोजन का मध्यमान एवं मानक विचलन प्रस्तुत किया गया है। सारणी से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के संवेगात्मक, सामाजिक तथा शैक्षिक समायोजन का मध्यमान क्रमशः 12.87, 10.29 तथा 11.89 और मानक विचलन क्रमशः 2. 88, 3.44 तथा 3.62 है। मध्यमान से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के संवेगात्मक तथा शैक्षिक समायोजन का स्तर अति असन्तोषजनक पाया गया है जबकि विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का स्तर असन्तोषजनक पाया गया है। मध्यमान से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों को सबसे अधिक समस्या संवेगात्मक समायोजन में तथा सबसे कम समस्या सामाजिक समायोजन में है।

सारणी – 2

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों एवं बालिकाओं के समायोजन के तुलनात्मक अध्ययन हेतु 'टी–मान'

समायोजन	लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	परिणाम
संवेगात्मक	बालक	100	13.45	2.77	2.860**	असार्थक
	बालिका	100	12.30	2.90		
सामाजिक	बालक	100	9.98	3.30	1.270	असार्थक
	बालिका	100	10.60	3.59		
शैक्षिक	बालक	100	11.57	2.38	1.267	असार्थक
	बालिका	100	12.22	4.54		

**** = 0.05 सार्थकता स्तर*** ***आवृत्ति अंश = 198***

सारणी–2 में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों एवं बालिकाओं के समायोजन के तुलनात्मक अध्ययन हेतु 'टी–मान' प्रदर्शित किया गया है।

सारणी से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों एवं बालिकाओं की संख्या क्रमशः 100 तथा 100 है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों के संवेगात्मक समायोजन का मध्यमान 13.45 तथा मानक विचलन 2.77 है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं के संवेगात्मक समायोजन का मध्यमान 12.30 तथा मानक विचलन 2.90 है। माध्यमिक स्तर पर

अध्ययनरत बालकों एवं बालिकाओं के संवेगात्मक समायोजन का प्राप्त 'टी–मान' 2.860 है। यह 'टी–मान' 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है क्योंकि यह सारणी मान 2.58 से उच्च पाया गया है। इससे स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों तथा बालिकाओं के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अन्तर है। मध्यमान से स्पष्ट है कि बालिकाओं का संवेगात्मक समायोजन बालकों की तुलना में उच्च है।

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों के सामाजिक समायोजन का मध्यमान 9.98 तथा मानक विचलन 3.30 है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं के सामाजिक समायोजन का मध्यमान 10.60 तथा मानक विचलन 3.59 है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों एवं बालिकाओं के सामाजिक समायोजन का प्राप्त 'टी–मान' 1.270 है। यह 'टी–मान' 0.05 सार्थकता स्तर पर भी सार्थक नहीं है क्योंकि यह सारणी मान 1.96 से भी निम्न पाया गया है। इससे स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों एवं बालिकाओं के सामाजिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों के शैक्षिक समायोजन का मध्यमान 11.57 तथा मानक विचलन 2.38 है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन का मध्यमान 12.22 तथा मानक विचलन 4.54 है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों एवं बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन का प्राप्त 'टी–मान' 1.267 है। यह 'टी–मान' 0.05 सार्थकता स्तर पर भी सार्थक नहीं है क्योंकि यह सारणी मान 1.96 से भी निम्न पाया गया है। इससे स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों व बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः परिकल्पना कि *''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों एवं बालिकाओं के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है''* आंशिक रूप से निरस्त एवं मुख्य रूप से स्वीकृत की जाती है।

सारणी – 3
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों के समायोजन के तुलनात्मक अध्ययन हेतु 'टी–मान'

समायोजन	क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	परिणाम
संवेगात्मक	ग्रामीण	100	12.33	2.41	2.705*	असार्थक
	शहरी	100	13.42	3.22		
सामाजिक	ग्रामीण	100	8.79	3.14	6.799**	असार्थक
	शहरी	100	11.79	3.09		
शैक्षिक	ग्रामीण	100	13.15	3.06	5.196**	असार्थक
	शहरी	100	10.64	3.72		

***** = 0.01 सार्थकता स्तर*** ***आवृत्ति अंश = 198***

**** = 0.05 सार्थकता स्तर***

सारणी–3 में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों के समायोजन के तुलनात्मक अध्ययन हेतु 'टी–मान' प्रदर्शित किया गया है।

सारणी से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 100 तथा 100 है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन का मध्यमान 12.33 तथा मानक विचलन 2.41 है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन का मध्यमान 13.42 तथा मानक विचलन 3.22 है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन का प्राप्त 'टी–मान' 2.705 है। यह 'टी–मान' 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है क्योंकि यह सारणी मान 1. 96 से उच्च पाया गया है। इससे स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अन्तर है। मध्यमान से स्पष्ट है कि ग्रामीण विद्यार्थियों का संवेगात्मक समायोजन शहरी विद्यार्थियों की तुलना में उच्च है।

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का मध्यमान 8.79 तथा मानक विचलन 3.14 है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का मध्यमान 11.79 तथा मानक विचलन 3.09 है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का प्राप्त 'टी–मान' 6.799 है। यह 'टी–मान' 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है क्योंकि यह सारणी मान 2.58 से उच्च पाया गया है। इससे स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अन्तर है। मध्यमान से स्पष्ट है कि ग्रामीण विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन शहरी विद्यार्थियों की तुलना में उच्च है।

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का मध्यमान 13.15 तथा मानक विचलन 3.06 है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का मध्यमान 10.64 तथा मानक विचलन 3.72 है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का प्राप्त 'टी–मान' 5.196 है। यह 'टी–मान' 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है क्योंकि यह सारणी मान 2.58 से उच्च पाया गया है। इससे स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर

है। मध्यमान से स्पष्ट है कि शहरी विद्यार्थियों का शैक्षिक समायोजन ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में उच्च है।

अतः परिकल्पना कि *''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है''* पूर्ण रूप से निरस्त की जाती है।

सारणी – 4

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन के तुलनात्मक अध्ययन हेतु 'टी–मान'

समायोजन	वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	परिणाम
संवेगात्मक	कला	100	13.08	2.76	1.002	असार्थक
	विज्ञान	100	12.67	3.01		
सामाजिक	कला	100	10.35	3.47	0.245	असार्थक
	विज्ञान	100	10.23	3.44		
शैक्षिक	कला	100	11.58	3.83	1.228	असार्थक
	विज्ञान	100	12.21	3.40		

सारणी–4 में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन के तुलनात्मक अध्ययन हेतु 'टी–मान' प्रदर्शित किया गया है।

सारणी से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 100 तथा 100 है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला वर्ग के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन का मध्यमान 13.08 तथा मानक विचलन 2.76 है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन का मध्यमान 12.67 तथा मानक विचलन 3.01 है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला वर्ग के विद्यार्थियों एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन का प्राप्त 'टी–मान' 1.002 है। यह 'टी–मान' 0.05 सार्थकता स्तर पर भी सार्थक नहीं है क्योंकि यह सारणी मान 1.96 से भी निम्न पाया गया है। इससे स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला वर्ग के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का मध्यमान 10.35 तथा मानक विचलन 3.47 है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का मध्यमान 10.23 तथा मानक विचलन 3.44 है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का प्राप्त 'टी–मान' 0.245 है। यह 'टी–मान' 0.05 सार्थकता स्तर पर भी सार्थक नहीं है क्योंकि यह सारणी मान 1.96 से निम्न पाया गया है। इससे स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का मध्यमान 11.58 तथा मानक विचलन 3.83 है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का मध्यमान 12.21 तथा मानक विचलन 3.40 है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का प्राप्त 'टी–मान' 1. 228 है। यह 'टी–मान' 0.05 सार्थकता स्तर पर भी सार्थक नहीं है क्योंकि यह सारणी मान 1.96 से निम्न पाया गया है। इससे स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः परिकल्पना कि *''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है''* पूर्ण रूप से स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये गये हैं :–

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का स्तर असन्तोषजनक तथा संवेगात्मक तथा शैक्षिक समायोजन का स्तर अति असन्तोषजनक पाया गया है।
2. विद्यार्थियों का संवेगात्मक समायोजन सबसे निम्न तथा शैक्षिक समायोजन सबसे उत्तम पाया गया है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों तथा बालिकाओं के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया है। बालिकाओं का संवेगात्मक समायोजन बालकों की तुलना में उच्च पाया गया है। इसके विपरीत माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों एवं बालिकाओं के सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के संवेगात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया है। ग्रामीण विद्यार्थियों का संवेगात्मक एवं सामाजिक समायोजन शहरी विद्यार्थियों की तुलना में उच्च पाया गया है जबकि शहरी विद्यार्थियों का शैक्षिक समायोजन ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में उच्च पाया गया है।
5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के संवेगात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

शोध के निहितार्थ

प्रस्तुत शोध में संवेगात्मक, सामाजिक तथा शैक्षिक दृष्टि से माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थी

कुसमायोजित पाये गये हैं। कुसमायोजन का विद्यार्थियों पर नकारात्मक प्रभाव पड सकता है। अतः आवश्यक है कि संवेगात्मक, सामाजिक तथा शैक्षिक क्षेत्र में उन्हें समायोजित करने के प्रयास किये जाएं। इस क्षेत्र में अभिभावक, अध्यापक तथा परामर्शदाता अपनी भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं। सर्वप्रथम अभिभावकों को अपने बच्चों से उनकी समस्याओं पर चर्चा करनी चाहिए तथा उन्हें जीवन के प्रत्येक पक्ष का सामना करने के लिए तैयार किया जाना चाहिए। घर में अनुशासन तथा स्वतन्त्रता का एक सन्तुलित वातावरण होना चाहिए जिससे जहाँ बच्चे अपनी भावनाओं तथा इच्छाओं को स्वतन्त्र रूप से व्यक्त कर सकें। इससे बच्चों को संवेगात्मक समायोजन करने में सहायता मिल सकेगी।

सामाजिक समायोजन में अध्यापकों का विशेष योगदान हो सकता है। इस सन्दर्भ में यह आवश्यक है कि अध्यापक विद्यार्थियों को सामूहिक कार्य करने के लिए दे। इससे वे अपने सहपाठियों को समझ सकेंगे तथा अपने विचारों को दूसरों को समझा सकेंगे। इसी प्रकार शैक्षिक समायोजन के लिए अभिभावकों तथा अध्यापकों दोनों के द्वारा विद्यार्थियों को उचित पुनर्बलन प्रदान किया जाना चाहिए। उन्हें प्रशंसा और पुरस्कार आदि अभिप्रेरणत्मक प्रविधियों के द्वारा शैक्षिक क्षेत्र में आगे बढने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे उनका शैक्षिक समायोजन उत्तम हो सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

कौर, जसबीर तथा कौर, मनदीप (2016). स्टडी ऑफ एडजैस्टमेंट अमंग एडोलोसेन्ट गर्ल्स स्टडींग इन को–एजुकेशनल एण्ड नॉन को–एजुकेशनल स्कूलस, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ अलाइड प्रैक्टिस, रिसर्च एण्ड रिव्यू, वोल्यूम–III, इश्यू–II, पृ0सं0 1–6

गेट्स, उद्धृत उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की अधिगम की समस्याओं में शैक्षिक अभिप्रेरणा का उनकी अध्ययन आदत, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन, द्वारा सुभाष कुमार, शोध–प्रबन्ध (शिक्षाशास्त्र), 2009, चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

दुबे, भावेश चन्द्र (2011). विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा समायोजन का प्रभाव, भारतीय आधुनिक शिक्षा, वर्ष 31, अंक–3, पृ0सं0 89–95

देवी, निर्मला (2011). ए स्टडी ऑफ एडजैस्टमेन्ट ऑफ स्टूडेन्टस इन रिलेशन टू पर्सनेलिटी एण्ड एचीवमैंट मोटिवेशन, भारतीयम इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड रिसर्च, वोल्यूम–1, इश्यू–1

देवगन, प्रवीन तथा बघेल, अंजू (2012). अल्पसंख्यक वर्ग की छात्राओं के सशक्तीकरण के सम्बन्ध में उनके समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन, परिप्रेक्ष्य, वर्ष 19, अंक 2, पृ0सं0 119–134

निधि तथा करमाने, मुन्तिजर मकबूल (2015). एडजेस्टमेंट प्रोब्लमस ऑफ कॉलेज स्टूडेन्टस इन रिलेशन टू जेन्डर, सोशियोइकनोमिक स्टेटस एण्ड एकेडमिक एचीवमेन्ट, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ करेन्ट रिसर्च, वोल्यूम–7, इश्यू–4, पृ0सं0 14574–14578

बोरिंग, लैंगफेल्ड तथा वेल्ड, उद्धृत उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की अधिगम की समस्याओं में शैक्षिक अभिप्रेरणा का उनकी अध्ययन आदत, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन, द्वारा सुभाष कुमार, शोध–प्रबन्ध (शिक्षाशास्त्र), 2009, चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

मित्तल, अर्चना (2012). ए स्टडी आफ इमोशन्ल इन्टेलीजेन्स एण्ड एडजैस्टमेंट ऑफ सेकेन्डरी स्कूल स्टूडेन्टस, रिसेन्ट एजुकेशनल एण्ड साइक्लोजिकल रिसर्चज, वोल्यूम–2, वर्ष 1, पृ0सं0 55–60

मुछाल, महेश कुमार तथा कुमार, सुभाष (2008). उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का उनके समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन, परिप्रेक्ष्य, वर्ष–15, अंक–3, पृष्ठ सं0 89–99

यादव, कमलेश तथा नायक, गोपाल प्रसाद (2009). दृष्टिबाधित, मूक बधिर एवं सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, परिप्रेक्ष्य, वर्ष 16, अंक 3, पृ0सं0 43–52

येल्लाह (2012). ए स्टडी ऑफ एडजेस्टमेन्ट ऑन एकेडमिक एचीवमेंट ऑफ हाईस्कूल स्टूडेन्टस, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइन्सेज एण्ड इन्टरडिसीप्लिनरी रिसर्च, वोल्यूम–1, नं0 5, पृ0सं0 84–94

राम, सन्त तथा पचौरी, सुरेश चन्द्र (2013). माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि तथा सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, रिसेन्ट एजुकेशनल एण्ड साइक्लोजिकल रिसर्चज, वोल्यूम–1, वर्ष–2, पृ0सं0 46–50

शीतल (2016). ए कम्पैरेटिव स्टडी ऑफ एडजेस्टमेंट ऑफ एक्स्ट्रोवर्जन एण्ड इन्ट्रोवर्जन एडोलोसेन्ट स्टूडेन्टस, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी अलाईड रिसर्च रिव्यू एण्ड प्रैक्टिसिज, वोल्यूम–3, इश्यू–3, पृ0सं0 483–490

शेखर, चन्द्र, शाहना, सईद, जामवाल, अदिति तथा कौल, रितु (2014). स्टडी ऑफ एडजैस्टमेन्ट अक्रॉस जेन्डर एण्ड एजुकेशनल लेवलस, रिसेन्ट एजुकेशनल एण्ड साइक्लोजिकल रिसर्चज, इश्यू–2, वर्ष–3, पृ0सं0 11–14